

# हज व उमरह (ROMAN HINDI)

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahabab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohot books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronounciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

\*\*\*\*\*

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

## हज

### कुरआन व सुन्नत की रौशनी में

हज की तीन किस्में हैं :

हज्ज ए तमत्तो

हज्ज ए खिरान

हज्ज ए इफराद

नोट : आम तौर पर हिन्दुस्तानी हुज्जाज हज्ज ए तमत्तो ही करते हैं। इस किताब में हज्ज ए तमत्तो के अहकाम ही ज़िक्र किये जा रहे हैं।

हज्ज ए तमत्तो के लिए उमरह करना ज़रूरी है। इसलिए पहले ऊपर बताये गए तरीखे पर उमरह करे फिर एहराम खोल दे।

हज्ज ए तमत्तो का तरीखा हस्बे ज़ेल है :

1. 8 जुल हिज्जाह (यौमुत तरवियह) को मक्के मुकर्रमा में अपनी खियाम गाह से हज के लिए एहराम बाँधे।

2. एहराम बाँधने से कबल घुसुल करे और अपने जिस्म पर खुशबू लगाये।  
नोट : एहराम के कपड़ों पर खुशबू न लगाये, और औरतें न कपडे पर खुशबू लगाये और न ही जिस्म पर।
3. फिर हज की निय्यत करते हुए यू कहे : “अल्लाहुम्म लब्बैक हज्जन” (या अल्लाह ! मैं हज के लिए हाज़िर हूँ)।
4. बुलंद आवाज़ से तल्बिया कहे : “लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द, वन नेमत, लक वल मुल्क, ला शरीक लक” (मैं हाज़िर हूँ, या अल्लाह ! मैं तेरे (बारगाह) जनाब में हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं है, मैं हाज़िर हूँ, तमाम तारीफें तेरे लिए ही है, और तमाम नेमतें तेरी ही जानिब से है, सारी कायिनात में तेरी ही बादशाहत है, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं है)।
5. एक बार ये अलफ़ाज़ अदा करे : “अल्लाहुम्म हज्जतुन ला रिया-अ फीहा वला सुम-अह” (ऐ अल्लाह ! हज से न दिखावा मक्सद है न शोहरत मतलूब है)।

मिना

6. फिर मिना पहुँच कर जुहर की नमाज़ अदा करे, सारी नमाज़ें अपने अपने वक़्त पर खसर के साथ अदा करे।
7. 9 जुल हिज्जाह (यौम ए अरफह) को तुलूये आफताब के बाद तकबीर “अल्लाहु अकबर” व तहलील “ला इलाहा इल्लल्लाह” और तल्बिया कहते हुए मिना से अरफात के लिए रवाना हो जाये।

फ़ज़ीलत : अरफा के दिन से बढ़ कर कोई दिन नहीं जिस में बन्दे कसरत से जहन्नम से आज़ाद होते हैं।

और अल्लाह ताला खरीब होता है। फिर इन हाजियों का ज़िक्र फरिश्तों से फखरिया तौर पर करता है। और पूछता है बताओं ये लोग यहाँ क्यों आए हैं?

बेशक अल्लाह अहले अरफा का फखरिया ज़िक्र करते हैं आसमान वालो से, देखो मेरे बन्दे आये हैं।

8. हाजियों के लिए अरफा के दिन रोज़ा रखना जायेज़ है, क्यों कि शेख अल्बानी ने रोज़े से मना करने वाली हदीस को ज़ईफ़ कहा है, लेकिन मुस्तहब ये है के रोज़ा न रखें, लिहाज़ा शेख अल्बानी ने फ़रमाया के रोज़ा न रखने की सूरत ही में अरफा के दिन की इबादत में हाजी को ज्यादा आसानी रहेगी, और सहीह मुस्लिम में रोज़ा न रखने को मुस्तहब साबित करते

हुए यू बाब बाँधा गया है “अरफा के दिन, मैदाने अरफात में हाजियों के लिए रोज़ा न रखना मुस्तहब है”।

9. मैदाने अरफात में दाखिल होने से कबल मुमकिन हो तो “वादिये निम्रह” में खियाम करे फिर जुहर के वक़्त मैदान ए अरफात में इमामे हज का खुत्बा सुने, उसके बाद जुहर और असर की दोनों नमाज़ें एक अज़ान और दो इखामत के साथ बा जमात खसर (दो दो रकात करके) अदा करे।

वादिये निम्रह में ठहरना और मस्जिद ए निम्रह में आना मुमकिन ना हो तो अपने खैमों में जुहर के वक़्त, जुहर और असर की दोनों नमाज़ें एक अज़ान और दो इखामत के साथ बा जमात खसर (दो दो रकात करके) अदा करें।

10. जुहर और असर की नमाज़ें अदा करने के बाद अरफात में दाखिल होना और जबल ए अरफा (जबल ए रहमत) के दामन में (या जहाँ कही भी जगह मुयस्सर हो) वुखूफ करना, खिबला रुख खड़े होकर हाथ बुलंद करके कुरानी व नबवी दुआयें माँगना और दरमियान में तकबीर व तहलील और तल्बिया भी कहना चाहिए।

उस दिन इस दुआ को पढ़ना चाहिए क्यों के साबिखा  
अंबिया अलैहिमुस्सलाम और आप ﷺ की सुन्नत है : “ला  
इलाहा इल्लल्लाहू वहदहू ला शरीक लहु लहुल मुल्कु व  
लहुल हम्दु वहुव अला कुल्लि शैइन खदीर।” (अल्लाह ताला  
के अलावा कोई इबादत के लाएख नहीं है। वो अकेला है,  
उसका कोई शरीक नहीं है, इस कायनात की बादशाहत  
उसी की है, तमाम तारीफें उसी को सज़ावार है और हर  
चीज़ पर कुदरत रखता है।)

और ये दुआ भी साबित है :

“इन्नमल खैरु खैरुल आखिरह” (बिला शुबा हखीखी भलाई  
तो आखिरत की भलाई है)

अलबत्ता ताखीर होने वाले अगर दस तारीख को तुलूये फज़ से  
पहले मैदान ए अरफात पहुँच जाये तो उनका रुकन भी अदा हो  
जायेगा।

इमाम ए मस्जिद ए निमरह के साथ नमाज़ न मिले तो अकेले  
या जमात बना कर नमाज़ अदा की जा सकती है।

8 जुल हिज्जाह और 9 जुल हिज्जाह के दरमियान रात को  
मिना में खियाम को वाजिब समझना सही नहीं है बल्कि सुन्नत  
है। मामूली समझकर नज़र अंदाज़ भी न करे।

## मुज़दलिफा

11. गुरूब ए आफताब के बाद नमाज़ ए मगरिब अदा किये बगैर सुकून व विखार के साथ तल्बिया कहते हुए मुज़दलिफा रवाना हो जाये।

अरफाह से रवाना होते वक़्त बेहतर होगा के वुजू करके रवाना हो, अगर मुज़दलिफा आधी रात (12 बजे) तक भी न पहुँच सके तो रास्ते ही में मगरिब और इशा अदा कर ले।

12. मुज़दलिफा पहुँच कर मगरिब और इशा की नमाज़ें एक अज़ान दो इखामत के साथ खसर करके इकठ्ठा अदा करे।

13. रात सोकर गुज़ारना और 10 जुल हिज्जाह की नमाज़ ए फजर मामूल के वक़्त से थोडा पहले (यानी फजर का वक़्त शुरू होते ही) अदा करना चाहिए।

14. नमाज़ ए फजर बा जमात अदा करने के बाद मश-अरुल हराम पहाड़ी के दामन में (या जहाँ कही भी जगह मिले) किब्ला रुख हो कर हाथ बुलंद करके सूरज तुलू होने से कब्ल खूब रौशनी फैलने तक तकबीर व तहलील कहना, तौबा व इस्तिघफार करना और दुआयें माँगना चाहिए।

15. तुलू ए आफताब से क़ब्ल सुकून व विखार के साथ तल्बिया कहते हुए मिना रवाना होना और रास्ते में वादी ए मुहस्सर से तेज़ी से गुज़रना चाहिए।

कमज़ोर औरतों और उमर रसीदा और माज़ूर हज़रात के लिए आधी रात के बाद भी मुज़दलिफा से मिना को जाना जाएज़ है, लेकिन कंकरियाँ सूरज तुलू होने के बाद ही मारी जाये।

16. 10 जुल हिज्जाह को मुज्दलिफा से मिना पहुंचे, मुज्दालिफा से रवाना होते हुए कंकरियाँ लेले, या मिना के मैदान से भी ली जा सकती है, जिनका हजम (size) चने के दाने से कुछ बड़ा हो।

नोट : कंकरियों को धोना बिदत है।

10 जुल हिज्जाह को ये चार काम करने हैं :

दस (10) जुल हिज्जाह को ये चार काम करने हैं :

1 रमी

2 कुरबानी

3 हलक़ या तक़सीर

4 तवाफ़ ए इफ़ाज़ा व सई



17. पहला : तुलूये आफताब के बाद जमरह की तरफ रुख कर के मिना सीधे हाथ की तरफ और मक्का बायें (left) जानिब रहे। बड़े जमरे को एक एक करके सात (7) कंकरियाँ अल्लाहु अकबर कहकर मारे और उसके बाद तल्बिया बंद करे। और तुलूये आफताब से कबल कंकरियाँ मारना जाएज़ नहीं (तिरमिज़ी)। अलबत्ता ज़वाल ए आफताब (दोपहर) के बाद रात तक कंकरियाँ मारना जाएज़ है।

जमरात को कंकरी मारते वक़्त सिर्फ कंकरी मारे, दूसरी चीज़ें फेंक कर मारना गलत है, नज़दीक जाकर मारें, कंकरी कुवा नुमा गढ़े में गिरे काफी है, खम्बे को लगना ज़रूरी नहीं।

18. दूसरा : जमर ए उखबा की रमी (कंकरियाँ मारने) के बाद कुरबानी करे और मुमकिन हो तो इस से कुछ पका कर खाए। इस गोश्त में गरीबों का ज़रूर खयाल रखे। इन में से खाओ और क़नाअत से बैट रहने वालो और सवाल करने वालो को भी खिलाओ।

ऊँट (camel) और गाय (cow) में सात लोग शरीक हो सकते हैं। हदी के जानवर की इस्तेतात न हो तो अय्याम ए हज में तीन रोज़े और घर आने के बाद सात रोज़े रखिये।

हदी के लिए अर-राजेही बैंक में पैसे जमा कर सकते हैं।

19. तीसरा : कुरबानी के बाद हल्क (सर मुंडवाना) या तक्रसीर (cutting) करवाये और एहराम की चादरें उतार कर आम लिबास पहन ले। हल्क अफज़ल और तक्रसीर जाएज़ है। और हल्क या तक्रसीर हाजी के सीधी जानिब से शुरू करे।

20. चौथा : मिना से मक्का मुकर्रमा जाकर तवाफ ए इफाज़ा करे। (इस तवाफ ए इफाज़ा में इज्तेबा और रमल साबित नहीं, लिहाज़ा न करे, अलबत्ता हर तवाफ के सात (7) चक्कर के बाद दो रकात नमाज़ साबित है। लिहाज़ा तवाफ ए इफाज़ा के बाद भी दो रकात नमाज़ पढ़े), ज़मज़म पिये और कुछ हिस्सा सर पर डाल ले। फिर सफा व मरवा की सई करे और मक्के मुकर्रमा से मिना वापस आ जाये।

नोट : इन कामों के आगे या पीछे होने से कोई हर्ज नहीं है, लिहाज़ा तरतीब छोड़ने से दम (बकरा ज़बह करना) वाजिब नहीं होता।

नोट : 10 तारीख को जमरये कुबरा को कंकरियां मार लेने से हाजी पर एहराम की पाबंदियाँ खतम हो जाती है। सिर्फ हाजी अपनी बीवी से हमबिस्तरी नहीं कर सकता, अलबत्ता तवाफे

ज़ियारत और सई कर लेने के बाद बीवी से हमबिस्तरी करना भी जाएज़ है। (अल्बानी)

एक दूसरे कौल के मुताबिख 10 तारीख के चार कामों में से कोई दो काम करने के बाद ही एहराम उतार कर सादा लिबास पहन सकता है और आखरी काम करले तो बीवी से हमबिस्तरी भी हलाल हो जायेगी। (बिन बाज़)

मुलाहज़ा : एहतियात का तखाज़ा ये है की दो काम करने के बाद ही एहराम खोले ताकि, इखतेलाफात से बचा जाये। अगर किसी ने एक ही काम करने के बाद एहराम खोल दिया हो या एहराम की पाबंदियां का एहतेमाम न किया तो कोई कफ़ारा या दम लाज़िम नहीं आएगा, क्योंकि शेख अल्बानी रहिमहुल्लाह के पास एहराम खोलने (तहल्लुले अव्वल - एहराम की पाबंदियों से आज़ादी) के लिए चार में से एक काम काफी है। जहाँ तक बीवी से हमबिस्तरी की इजाज़त का मसला है वो चार काम करने के बाद ही हलाल है, इस में किसी का इखितलाफ नहीं।

नोट : इस मसले में एक बात का खयाल रहे के 10 जुल हिज्जाह को कंकरियाँ मारने के बाद हाजी एहराम निकाल कर आम लिबास पहन सकते हैं। लेकिन अगर रात हो जाये और वो तवाफे ज़ियारत न कर सके तो ऐसी सूरत में फिर एहराम बाँध

कर तवाफे ज़ियारत करेगा और तवाफे ज़ियारत के बाद एहराम उतार कर आम लिबास पहन सकता है।

नोट : (अगर किसी ने मगरिब के बाद एहराम दुबारा नहीं बाँधा और आम कपड़ों में ही तवाफे ज़ियारत कर लिया तो बाज़ उलमा किराम ने कहा के जाएज़ है, क्यों के एहराम दुबारा बांधना फ़र्ज़ नहीं है)। (वल्लाहु आलम)

11/12/13 जुल हिज्जाह

21 अय्याम ए तशरीख (11,12,13 जुल हिज्जाह) की रातें मिना में गुज़ारना और रोज़ाना ज़वाल ए आफ़ताब के बाद जमरये ऊला और जमरये वुस्ता और जमरये उखबा की बित-तरतीब रमी (कंकरियां मारना) करना चाहिए।

22 जमरये ऊला और जमरये वुस्ता को अल्लाहु अकबर कह कर कंकरियां मारने (रमी) के बाद किब्ला रुख खड़े होकर दुआयें माँगना चाहिये। लेकिन जमरये उखबा की रमी (कंकरियाँ मारना) के बाद दुआयें मांगे बगैर वापस पलट आना चाहिए।

जिस हाजी को गिनती में शक हो जाये तो जिस गिनती पर उसे यकीन है उस पर एतेमाद करते हुये बाकी गिनती मुकम्मल करे।

23 खियाम ए मिना के दौरान मुमकिन हो तो रोज़ाना मक्का जा कर तवाफ करे। (सिर्फ तवाफ करे, सई न करे)।

मस्जिद ए खैफ में बाजमात नमाज़ें अदा करे। (मस्जिद ए खैफ में 70 नबियों ने नमाज़ पढ़ी)।

ब कसरत तहलील व तकबीर, हम्द व सना, तौबा व इस्तिघफार और दुआयें मांगने की कोशिश करे।

24 12 जुल हिज्जाह को मिना से वापस आना हो तो गुरूब ए आफताब से क़बल मिना से निकल जाये। और अगर मिना से निकलने से पहले सूरज गुरूब हो जाये तो फिर 13 जुल हिज्जाह को ज़वाल के बाद रमी करके मिना से वापस आना चाहिए।

25 मक्का मुकर्रमा पहुँच कर घर रुक्सत होने से कबल तवाफ ए विदा अदा करे।

बाज़ हाजी हज के बाद जिद्दाह वगैरा जाते हैं, उनको चाहिए के तवाफ ए विदा करके जिद्दाह जायें, फिर घर जाना हो तो तवाफ ए विदा दुबारा करे।

नोट : हैज़ और निफास वाली औरतें तवाफ ए विदा नहीं करेंगी, उनके लिए छूट है।

नोट : अगर तवाफ ए ज़ियारत वतन लौटने के करीब करता है तो तवाफ ए विदा की भी नियत शामिल कर सकता है।

नोट : मजबूर इन्सान के लिए दूसरो को नायेब बनाना जाएज़ है।

नोट : हज के क़बूल होने के लिए मदीना जाना ज़रूरी नहीं और शर्त नहीं। मैं तो इस बात पर ज़ोर दूंगा के हाजी मदीना तय्यिबा भी जाये ताकि जो हज को जाये वो मदीना तय्यिबा की जियारत और वहाँ के अजर व सवाब से महरूम न हो और वहाँ के अजर व सवाब को भी हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन जो लोग ये तसव्वुर करते है के मदीना गए बग़ैर हज क़बूल नहीं होता, ये ख़याल ग़लत और बिला दलील है।

इन शा अल्लाह इस तरह हज कुरआन व सुन्नत के तरीखे पर मुकम्मल होगा।

### मदीना तय्यिबा का मुबारक सफ़र

मस्जिद ए नबवी में एक नमाज़ का सवाब एक हज़ार (1000) नमाज़ों के बराबर है और मस्जिद ए हराम में एक नमाज़ का

सवाब एक लाख (100000) नमाज़ों के बराबर है और मस्जिद ए अक्सा में एक नमाज़ का सवाब 250 नमाज़ों के बराबर है।

हाजी अगर मदीना तय्यिबा की तरफ सफ़र करना चाहे तो मस्जिद ए नबवी की ज़ियारत की निय्यत करे, अलबत्ता मदीना तय्यिबा पहुँच कर इसके लिए दर्जे जेल ज़ियारतें मशरू है :

### 1 मस्जिद ए नबवी की ज़ियारत

मस्जिद ए नबवी में दाखिल होते वक़्त दुआ पढ़ कर दाखिल हो फिर तहिय्यतुल मस्जिद पढ़े, अलबत्ता रियाज़ुल जन्नह (जन्नत की क्यारियों में से एक क्यारी जो अल्लाह के रसूल ﷺ के मिम्बर और घर के दरमियान का हिस्सा है) में दो रकात नफिल नमाज़ पढ़ना अफज़ल है।

### 2 क़बर ए रसूल की ज़ियारत

हाजी आप ﷺ की क़बर ए मुबारक के पास जाये, इन्तेहाई अदब व एहताराम के साथ धीमी आवाज़ में सलाम कहे और दरूद पढ़े फिर अबू बक्र सिद्दीख रजिअल्लाहुअन्हु और उमर ए फारूख रजिअल्लाहुअन्हु को भी सलाम कहे।

### 3 बखी उल ग़रखद की ज़ियारत :

ये मदीना तय्यिबा का खब्रस्तान है, हाजी वहाँ जाये सहाबा किराम रजिअल्लाहुअन्हुम और तमाम मोमिनो के लिए इस्तिघफार और बुलंद दरजात की दुआ करे। अलबत्ता खब्रस्तान में दाखिल होते वक़्त ये दुआ पढ़ना मुस्तहब है :

“अस्सलामु अलैकुम अहलद-दियार मिनल मूमिनीन वल मुस्लिमीन, व इन्ना इन-शा-अल्लाहु बिकुम ललाहिखून (व यहमुल्लाहुल मुस्तखदिमीन मिन्ना वल मुस्ताखिरीन) अस अलुल्लाहु लना वलकुमुल आफियह।”

नोट : बखी-उल-गरखद को जन्नतुल बखी या जन्नतुल मुअल्लाह कहने का सबूत नहीं मिला।

नोट : “बखी-उल-गरखद में मदफून हर शख्स जन्नती है” इसकी कोई दलील नहीं है।

4 शुहदा ए उहद की ज़ियारत :

हाजी शुहदा ए उहद के पास जाये और उनके दरजात की बुलंदी के लिए दुआ करे। यहाँ भी बखी उल गरखद (खब्रस्तान) वाली दुआ पढ़ना मस्नून है।

5 मस्जिद ए खुबा की ज़ियारत :



हाजी बा वुजू होकर मस्जिद ए खुबा जाये और दो रकात नमाज़ अदा करे, जिसका सवाब एक उमरह के बराबर है।

नोट : हफ्ते के दिन मस्जिद ए खुबा जाना सुन्नत है।

मदीना तय्यिबा में खियाम के दौरान मस्जिद ए नबवी में चालीस (40) नमाज़ें लाज़मी और ज़रूरी समझकर अदा करना किसी भी सहीह हदीस से साबित नहीं है और न ही सहाबा किराम (रज़ि) ने ऐसा अमल किया है बलके जितनी भी नमाज़ें पढने का मौखा मिले सादत है। याद रहे इन नमाज़ों का हज व उमरह से कोई ताल्लुख नहीं। इस बारे में पेश की जाने वाली हदीस ज़ईफ़ है। जबके इस ज़ईफ़ हदीस के मुखाबले में सहीह हदीस मौजूद है जिसमे किसी भी जगह, इलाका या मस्जिद की कोई तख़सीस नहीं और इन में चालीस (40) नमाज़ों की बजाये 40 दिन का ज़िकर है। हदीस का मतन ये है : (जिसने चालीस दिन तमाम नमाज़ें बाजमात तकबीरे ऊला के साथ अदा की उसके लिए दो चीज़ों से बरात लिख दी जाती है : 1 जहन्नम के आग से, 2 निफाक़ से)।

उमरह

## कुरआन और सुन्नत की रौशनी में

हज्ज ए तमत्तो के लिए उमरह करना ज़रूरी है। इस लिए नीचे दिए गए तरीखे पर पहले उमरह करलें।

हर उमरह करने वाले को चाहिए के :

1 ज़रूरत हो तो पहले बाल वगैरा काट ले, फिर घुसुल करे और जिस्म पर खुशबू लगाये।

2 एहराम बांधे यानी मर्द हज़रात अपने बदन से तमाम सिले हुए कपडे निकाल कर (बगैर सिले हुए) तहबन्द पहन लें और चादर लपेट लें। अफज़ल यही है के एहराम सफ़ेद (white) और साफ़ सुत्रा हो। औरत अपने आम कपडे में यानी लिबास जो जैब-ओ-ज़ीनत और शोहरत व नुमाईश से खाली हो।

ऐसी चप्पल जो टखने न ढांपे पहनने की इजाज़त है।

नोट : हवाई जहाज़ से जेद्दाह जाने वाले हज़रात जहाज़ में बैठने से पहले एहराम बाँध सकते हैं। लेकिन मीक़ात पर पहुंचने के बाद एहराम की दिल में निय्यत करते हुए अलफ़ाज़ अदा करें।

नोट : निय्यत सिर्फ़ दिल के इरादे का नाम है, नमाज़ और दीगर इबादात में निय्यत दिल ही से की जाती है, लेकिन सिर्फ़

हज व उमरह में दिल से निय्यत के साथ ज़बान से अलफ़ाज़ की अदाएगी भी मतलूब है।

### मीक़ात व नीयत

3 मीक़ात पहुँच कर दिल में उमरह की निय्यत करे और ये कहे, “अल्लाहुम्म लब्बैक उम्रतन” (या अल्लाह ! मैं उमरह के लिए हाज़िर हूँ)।

अगर ऐसा नहीं किया और आगे बढ़ गए तो फिर फिद्या देना होगा। (एक बकरा ज़बह करके अहले मक्का के फुखरा में तक़सीम किया जायेगा)।

अगर कोई दूसरों की तरफ से उमरह कर रहा हो तो निय्यत करने के साथ “अल्लाहुम्म लब्बैक उम्रतन अन.....” (या अल्लाह ! मैं उमरह के लिए हाज़िर हूँ फलाँ शख्स की तरफ से) कहते हुए उस आदमी का नाम भी ले।

अगर हज और उमरह को जाने वाले को मक्का पहुँचने में किसी किसम की रुकावट का खदशा हो तो उसे निय्यत करते वक़्त ये कहना चाहिए : “अल्लाहुम्म महिल्ली हैसु हबस्तनी” (या अल्लाह

! तू मुझे जिस वक़्त और जहाँ रोक देगा वहीं मेरे लिए हज और एहराम से निकलने और हलाल होने की जगह है।

फिर अगर वो मक्का न पहुँच सके तो बगैर दम दिए हलाल हो जायेगा, यानी एहराम खोल सकता है।

अगर ये हज नफिल हो तो इस हज की क़ज़ा भी नहीं, लेकिन अगर फ़र्ज़ हज अदा कर रहा हो तो इस से हज साखित नहीं होता, जब मुस्तखबिल में इस्तेतात हो तो फ़र्ज़ हज अदा करना लाज़मी होगा।

एहराम बाँधने के लिए कोई मखसूस नमाज़ नहीं। अलबत्ता किसी नमाज़ के बाद एहराम बाँध ले तो ये मुस्तहब है। बाज़ उलमा ने कहा के जुल हुलैफा (मदीना की मीक़ात) में दो रकात नमाज़ मुस्तहब है। ये एहराम की नमाज़ नहीं है बलके इस जगह की मखसूस फ़ज़ीलत की बुनियाद पर है। वल्लाहु आलम।

## तल्बिया

4 एहराम बाँधने के बाद बुलंद आवाज़ से यू तल्बिया पुकारे :  
“लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक,

इन्नल हम्द, वन नेमत, लक वल मुल्क ला शरीक लक” (मैं हाज़िर हूँ, या अल्लाह ! मैं तेरी जनाब (बारगाह) में हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं है, मैं हाज़िर हूँ, तमाम तारीफें तेरे लिए ही है, और तमाम नेमतें तेरी ही जानिब से है, सारी कायिनात में तेरी ही बादशाहत है, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं है)।

तल्बिया की फज़ीलत : तल्बिया शआइरे हज में से है। सबसे बेहतरीन हज वो है जिस में तल्बिया की गूँज ज्यादा हो। तल्बिया कहने वाला तल्बिया कहता है तो उसके साथ दायें बायें जानिब ज़मीन के किनारों तक तमाम पत्थर, दरख़्त और कंकरियाँ सब “लब्बैक” पुकारते हैं, जिसका अजर तल्बिया कहने वाले को मिलता है।

नबी ए करीम ﷺ से ये दुआयें भी साबित है :

लब्बैक इलाहल हक़ (मैं हाज़िर हूँ ऐ माबूदे बर हक़)।

और नबी ए करीम ﷺ से तल्बिया के बाद इज़ाफे पर इकरार और इजाज़त साबित है।

“लब्बैक ज़ल मारिजी लब्बैक ज़ल फवाज़िल।”

“लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक व सादैक वल खैरु फियदैक  
वर्रघबाउ इलैक वल अमल।”

खवातीन के लिए भी जायेज़ है के वो बुलंद आवाज़ से तल्बिया  
कहे (इतनी के खरीब रहने वाली खातून सुन ले)।

5 जैसे ही मक्का की आबादी देखे तल्बिया बंद करदे, ये सुन्नत  
है।

मक्का में दाखिला

मक्का में दिन में दाखिल होने या सुन्या उल्या (बाबुल-  
मुअल्लात) से दाखिल होने और मस्जिद ए हराम में बाबे बनी  
शैबा के मुखाम से दाखिल होने की अगर कोई कोशिश करता है  
तो सीरते नबी से इसकी गुन्जायिश ज़रूर है, लेकिन ये फ़र्ज़ व  
लाज़िम नहीं है। इसलिए खुद भी मशख़्खत में न पड़े और दूसरो  
को भी मशख़्खत में न डालें।

मक्का या मस्जिद ए हराम में जहाँ से भी सहूलत हो दाखिल हो  
सकता है।

6 तवाफ से पहले वुजू करले।

7 मस्जिद ए हराम में दाखिल होते वक़्त पहले दाया (right) खदम रखे और ये दुआ पढ़ें : “अऊज़ु बिल्लाहिल अज़ीम व बी वजही हिल करीम व सुल्तानिहिल खदीम मिनशैतानिर्रजीम” (मैं अज़मत वाले अल्लाह, उसके करम वाली ज़ात और उसके अज़ली व अबदी खुव्वत व शौकत के ज़रिये शैताने मरदूद से पनाह चाहता हूँ)।

“बिस्मिल्लाह वस्सलामु अला रसूलिल्लाह, अल्लाहुम्मग फिरली जुनूबी वफ़तह ली अब्बाब रहमतिक” (अल्लाह के नाम से और रसूल ﷺ पर सलाम भेजते हुए मस्जिद में दाखिल होता हूँ, या अल्लाह ! मेरे गुनाह माफ़ करदे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे)।

और निकलते वक़्त ये दुआ पढ़नी चाहिए, (left) बायें खदम से निकलें : “बिस्मिल्लाह वस्सलामु अला रसूलिल्लाह, अल्लाहुम्मग फिरली जुनूबी वफ़तह ली अब्बाब फज़लिक” (अल्लाह के नाम से और रसूल ﷺ पर सलाम भेजते हुए मस्जिद से निकलता हूँ, या अल्लाह ! मेरे गुनाह माफ़ करदे और मेरे लिए अपने फज़ल के दरवाज़े खोल दे)।

तवाफ में इस बात का खयाल रखें कि आप की वजह से दूसरों को तकलीफ न हो, खुसूसन हजरे अस्वद को बोसा देने या छूने के दौरान।

तवाफ शुरू करने से पहले कंधो वाली चादर का हिस्सा दायें (right) कंधे के नीचे से निकाल कर बायें (left) कंधे पर डाल ले (हालात ए इज्तेबा इखितयार करे)।

हज्र ए अस्वद को (दायें हाथ से) छूकर या इशारे से (इस्तेलाम कर के) तवाफ शुरू करे।

काबेतुल्लाह को देखते हुए तवाफ करना और दुआ करते जाना जायेज़ है।

नोट : हज्र ए अस्वद को बोस देना और अगर मुमकिन हो तो उस पर पेशानी भी रखना जायेज़ है। और अगर मुमकिन न हो सके तो हाथ या छड़ी से उसको छू लेना और जिससे छुआ है उसका बोसा लेना जायेज़ है। हाँ अगर छूना लोगों की भीड़ की वजह से मुश्किल हो तो हाथ से इशारा करदे, लेकिन इशारे की सूरत में हाथ को बोसा न दे और इशारा करते वक़्त (रफ-उल-यदैन की तरह) दोनों हाथों को बुलंद न करे बलके सिर्फ दायें (right) हाथ का इशारा हज्रे अस्वद को करदे।



नोट : काबा को देखते ही हाथ उठाना और दुआ करना चाहिए, और ये दुआ सहाबी से साबित है : “अल्लाहुम्म अंतस सलाम व मिन्कस सलाम फहय्यिना रब्बना बिस सलाम” (या अल्लाह ! तू सरापा सलामती वाला है और तेरी ही जानिब से सलामती है तो ए मेरे रब ! जिस्म रूह की सलामती के साथ हमें जीने की तौफीक़ दे)।

8 हज़ ए अस्वद के छूते या इशारा करते (इस्तेलाम के) वक़्त “अल्लाहु अकबर” या “बिस्मिल्लाही अल्लाहु अकबर” कहे।

फज़ीलत : हज़ ए अस्वद और रुकने यमानी को छूने से गुनाह धुल जाते हैं।

खयामत के दिन अल्लाह ताला हज़ ए अस्वद लायेंगे, उसकी दो आँखें होंगी, जिससे वो देख रहा होगा और ज़बान होगी, जिससे वो बात कर रहा होगा, उस शख्स के हक़ में गवाही देगा जो उसे हक़ के साथ इस्तेलाम किया होगा।

हज़ ए अस्वद जन्नत से उतारा गया पत्थर है, वो बरफ से ज्यादा सफ़ेद था, लेकिन बनी आदम की खताओं के सबब सियाह (काला) पड़ गया।

9 रुकन ए यमानी को सिर्फ छुये, बोसा न दे। अगर छूना मुमकिन न हो तो इशारा किये बगैर निकल जाये।

10 रुकन ए यमानी और हज़ ए अस्वद के दरमियान ये दुआ पढ़ें : “रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतौ वफिल आखिरति हसनतौ वखिना अज़ाबन्नार” (ऐ हमारे रब ! हमें इस दुनिया में भलाई अता फरमा और आखिरत में भी भलाई से नवाज़ और जहन्नम की आग से बचा)।

और बाकी तवाफ में जो भी कुरआन या सही अहादीस की दुआयें याद हो वो पढ़ना मस्नून है।

नोट : तवाफ के लिए कोई मखसूस दुआ नहीं है। तवाफ के दौरान गुफ्तगू जायेज़ है लेकिन बिना वजह बात चीत से परहेज़ करें, इबादत पर तवज्जोह दें।

अगर औरत हैज़ की हालत में हो तो तवाफ न करे, अलबत्ता औरत मस्जिद में बैठ सकती है। मस्जिद में हैज़ वाली औरत दाखिल न होने की सारी हदीसें ज़ईफ़ है, बलके इसके खिलाफ दाखिल होने की इजाज़त मिलने वाली हदीसें मौजूद है।

एक लाख का सवाब मस्जिद ए हरम के लिए खास है। मक्का की हर मस्जिद की यही फज़ीलत समझने में एहतियात लाज़मी है।

11 मर्दों को चाहिए कि तवाफ़े खुदूम के पहले तीन चक्करों में तेज़ (रमल) चले, और बाकी चार चक्करों में मामूल की चाल चलें। औरतों के लिए तेज़ (रमल) नहीं चलना चाहिए।

12 काबा का दरवाज़ा और हज़्र ए अस्वद के दरमियानी हिस्से को मुल्तज़म कहा जाता है। यहाँ पर अपना चेहरा, दोनों हाथ और सीने को काबे के उस हिस्से से चिमटा कर गिडगिडा कर दुआ मांगना नबी ﷺ और सहाबा किराम रजिअल्लाहुअन्हुम से साबित है।

13 इसी तरह काबतुल्लाह के सात चक्कर मुकम्मल करें। तवाफ़ के हर चक्कर में मुमकिन हो तो हज़्र ए अस्वद का इस्तेलाम करे या फिर दूर से ही इशारा करके गुज़र जाये।

मुखाम ए इब्राहीम

14 सात चक्कर पूरे करने के बाद : “वत्तखिजु मिम मखामी इब्राहीम मुसल्ला” (और तुम मुखाम ए इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बनाओ) पढ़ते हुए मुखाम ए इब्राहीम की तरफ आये और वहाँ (या जहाँ कहीं भी जगह मिले) दो रकात नमाज़ अदा करे, पहली रकात में (खुल या अय्युहल काफिरून) और दूसरी रकात में (खुल हु वल्लाहु अहद) पढ़े। (इसके अलावा कोई और सूरतें या आयत पढ़ने में भी कोई हर्ज नहीं है)।

### ज़मज़म

15 नमाज़ के बाद आबे ज़मज़म (उसी जगह टहर कर) पिये और कुछ सर पर डाले, बैठ कर पीना भी जायेज़ है।

16 ज़मज़म पीने के बाद फिर हज़ ए अस्वद का इस्तेलाम करना और सई के लिए सफा पहाड़ की तरफ जाना चाहिए।

### सई

17 सफा पहाड़ पर चढते हुए ये पढ़े : “इन्नसफा वल मरवत  
मिन शआ इरिल्लाह फ़मन हज्जल बैत अवी’ तमर फला जुनाह  
अलैहि ऐ यत्तव्वफ बिहिमा वमन ततव्वअ खैरन फ इन्नल्लाह  
शाकिरून अलीम” (याद रखो सफा और मरवा पहाड़िया अल्लाह  
की (अल्लाह ताला के खाबिले एहताराम मखामात) निशानियों में  
से दो निशानियाँ है, तो जो कोई बैतुल्लाह का हज या उमरह  
करे तो उसे उन दोनों का तवाफ़ करने में कोई गुनाह नहीं है,  
और जिसने नफली नेकी की तो अल्लाह ताला खदरदान और  
खूब जानने वाला है)। और फिर ये अलफ़ाज़ कहे : “अब्दऊ बिमा  
बदा-अल्लाहु बिही” (मैं उसी से शुरू करता हूँ जिससे अल्लाह  
ताला ने शुरू किया है)।

18 सफा पहाड़ी पर चढ़ कर क़िबला रुख हो कर तीन मरतबा  
“अल्लाहु अकबर” कहे फिर तीन मरतबा ये कलिमात पढ़े “ला  
इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहु लहुल मुल्कु व लहुल  
हम्दु युहयी व युमीतु व हुवा अला कुल्लि शैइन खादीर, ला  
इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू अन्जज़ा वा दहू व नसर अब्दहू व  
हज़मल अहज़ाबा वहदहू” (अल्लाह के अलावा कोई माबूद ए  
बरहक़ नहीं, वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं है, बादशाहत  
उसी की है, तमाम क़िस्म की तारीफ़ें उसी के लिए है, वो हर

चीज़ पर कुदरत रखता है, उसके अलावा कोई भी माबूद ए हखीखी नहीं है, वो अकेला है, उसने अपना किया हुआ वादा पूरा किया, अपने मानने वाले बन्दे (मुहम्मद ﷺ) की मदद व नुसरत की और अपने दीन की मुखालिफत करने वालो को उसी अकेले ने शिकस्त दी), और दरमियान में (खूब) दुआयें मांगे।

19 सफा से सई का आगाज़ करके मरवा पहाड़ी पर जाना और वही अमल दुहराना चाहिए, जो ऊपर 18 पाइंट में दिया गया है।

20 मर्द हज़रात सबज़ (green) निशानी के दरमियान तेज़ तेज़ चलें (औरतें नहीं)।

21 सफा से मरवा तक एक चक्कर शुमार करके इस तरह सात चक्कर पूरे करे।

नोट : इस तरह मरवा से सफा दूसरा चक्कर शुमार होगा, सातवाँ (7) चक्कर मरवा पर खतम होगा।

22 दौरान ए सई जो भी कुरानी या सहीह अहादीस की दुआयें याद हो पढ़ते रहें या किसी सहीह दुआओं की किताब में देख कर पढ़ें।

सई के लिए वुजू ज़रूरी नहीं।

सई में ये दुआ बाज़ सहाबा से साबित है : “रब्बिघफिर वरहम इन्नक अंतल आज्जुल अकरम” (मेरे रब ! मेरी मघ्फिरत कर और मुझ पर रहम कर क्यों के तू सबसे ज़्यादा इज्जत व करम वाला है)।

तवाफ, सई वगैरा के वक़्त देखा गया है के लोग कामेरा से तस्वीरें लेते है, याद रखिया यादगार तस्वीर का लेना ना जायज़ है और हरम की तौहीन है।

तवाफ और सई के दौरान नमाज़ शुरू हो जाये तो तवाफ और सई छोड़ कर नमाज़ में शामिल होजाना चाहिए, नमाज़ के बाद बाक़ी तवाफ और बाक़ी सई मुकम्मल करें।

23 सई के बाद मर्दों को सारे सर के बाल कटवाना या सर मुंडवाना चाहिए और खवातीन को एक पोर बाल काटना चाहिए।

उमरह करने वाले और हुज्जाज एक दूसरे के बाल निकाल सकते है, इसी तरह औरतें एक दूसरे के बाल एक पोर के बराबर काट सकती है, चाहे मरवा पहाड़ी पर या घर आकर।

औरतें इस बात का खयाल रखें की कोई ना महरम उनके बाल ना काटे, महरम ही काटे या खुद औरत काटले।

24 फिर एहराम की चादरें उतार कर आम लिबास पहन ले।

इन शा अल्लाह इस तरह उमरह कुरआन और सुन्नत के तरीखे पर मुकम्मल होगा।



